सुनीता कुमारी
सहायक प्रोफेसर
हिन्दी विभाग
सोगरा कॉलेज, बिहारशरीफ,
नालंदा।

हिन्दी (आनर्स) बी० ए० - पार्ट -(1)

वात्सल्य रस के सिद्ध कवि सूरदास और उनकी भक्ति-भावना

महाकवि 'सूर' की काव्यगत विशेषताओं का नाभादास जी ने अपने भक्तमाल नामक ग्रंथ में इस प्रकार उल्लेख किया है —

उक्ति ओज अनुप्रास, बरन स्थिति अति भारी।
बचन प्रीति निर्वाह अर्थ अद्भुत तुक धारी॥
प्रतिबिम्बित दिवि दृष्टि हृदय हरि लीला भासी।
विमल बुद्धि गुण और की जो वह गुण श्रवननि धरै।
सूर कवित सुन कौन कवि जो नहीं सिरचालन करै॥

इस पद्य में सूर की काव्य संबंधी सभी विशेषताएँ आ जाती हैं। इन्होंने अपने काव्य में श्रीकृष्ण की बाल-सुलभ क्रीड़ायें, कालिन्दी के कछारों में ग्वाल-बालों के साथ कृष्ण का मनोहर चांचल्य, हरे-भरे सघन कुंजों में व्रजबालाओं के साथ प्रेमलीला, श्रीकृष्ण का मनोहर चांचल्य मथुरा गमन तथा उनके वियोग में विकल व्रज-वनिताओं के मनोभावों के मार्मिक चित्रण एक सूर की दृष्टि ओझल ना रह गई। तुलसी की भाँति सूर

ने यद्यपि कृष्ण के सम्पूर्ण जीवन का चित्र उपस्थित नहीं किया, फिर भी सूर ने जिस अंग का वर्णन किया, वह आज तक अद्वितीय है। सूर ने अपने काव्य में शृंगार और वात्सल्य इन रसों को ही प्रधानता दी। शृंगार के संयोग और वियोग दोनों पक्षों के निरूपण में सूर ने अद्वितीय सफलता प्राप्त की। ब्रज-वनिताओं के साथ श्रीकृष्ण के प्रेम व्यवहार को कवि स्वयं अपने हृदय की आँखों से देखकर आनंद-विभोर होकर गा उठता है और इस प्रकार से संयोग विरह के अनेक चित्र प्रस्तुत करने लगते हैं। कृष्ण के मथुरा चले जाने पर विरह में गोपियों के विरह की सूक्ष्म से सूक्ष्म दशाओं का जैसा वर्णन सूर ने किया है, वैसा अन्यत्र दुर्लभ है। इसी प्रकार वात्सल्य वर्णन में तो सूर नितान्त अद्वितीय हैं, आज तक कोई भी कवि इनकी समता में नहीं ठहरता। आचार्य शुक्ल जी की दृष्टि में – " वे क्षेत्र का कोना-कोना झाँक आये हैं।" सूर की प्रशंसा करते हुए 'श्रीवियोगहरि' ने लिखा है " 'सूर' ने यदि वात्सल्य को अपनाया है, तो वात्सल्य ने सूर को अपना एकमात्र आश्रय स्थान माना है।" इस क्षेत्र में हिन्दी में साहित्य का कोई भी कवि

सूर की समता नहीं कर सकता।

सूरदास जी महाप्रभु वल्लभाचार्य जी के शिष्य थे। शिष्य होने से पूर्व वे दास्य भाव के पद लिखा करते थे। वल्लभाचार्य जी ने स्वयं कहा, "ऐसो घिघियात काहे हो है, कछु भगवत् लीला को वर्णन कर।" इनके ही आदेश से सूरदास ने श्रीमद्भागवत की कथाओं को गेय पदों में प्रस्तुत किया। वल्लभाचार्य ने पुष्टि-मार्ग की स्थापना की थी और पुष्टि-भाव की भक्ति का प्रचार किया। वल्लभ और कृष्ण के प्रति सखा इन दोनों रसों का ही वर्णन अभीष्ट था। वात्सल्य और श्रृंगार कृष्ण के कंसहारी और द्वारिकावासी रूप में है, यद्यपि जिस सम्प्रदाय में सूर दीक्षित थे, उसमें बालकृष्ण की महिमा थी। सूर ने वात्सल्य वर्णन बड़े विस्तार से किया। इस वर्णन में न कहीं उन्होंने संकोच किया और न ही झिझके। बालक और युवक कृष्ण की लीलाओं को उन्होंने बड़े ब्यौरे के साथ प्रस्तुत किया। घोर से घोर श्रृंगार की बात करने में भी उन्होंने संकोच नहीं किया।

कृष्ण जन्म की आनंद बधाइयों के पश्चात् बाल लीलाओं का आरंभ होता है। सूर ने शैशवावस्था से लेकर कौमार्यावस्था तक के अनेक चित्र प्रस्तुत किये हैं। इन चित्रों को कई भागों में विभाजित किया जा सकता है —

Scanned with CamScanner

(1) रूप वर्णन

(2) चेष्टाओं का वर्णन

(3) क्रीड़ाओं का वर्णन

(4) भावनाओं का वर्णन

(5) संस्कारों, उत्सवों और समारोहों का वर्णन।

रूप - वर्णन में सूर ने कृष्ण के सौन्दर्य की अनेक उद्‌भावनायें की हैं। ब्रज - बालायें कृष्ण के बाल - सौन्दर्य पर तन - मन - धन सबकुछ न्योछावर करने को तैयार हैं, पर कृष्ण का सामीप्य छोड़ना उन्हें स्वीकार नहीं —

हौं बलि जाऊँ छबीले लाल की।
धिटक रही चहुँ दिसि जो लटुलियाँ, लटकना - लटकनि भाल की।
मोतिन सहित नासिका नथुनी, कण्ठ, कमल दल माल की।
सूरदास प्रभु प्रेम मगन भई, ढिंग तजहि ब्रज बाल की।

कृष्ण पालने में सोए हैं। यशोदा पालने को हिलाकर और लोरी गाकर कृष्ण को सुलाने का प्रयत्न कर रही हैं, परन्तु कृष्ण भी कम चालाक नहीं हैं, जब तक पालना हिलता रहता है और यशोदा के मधुर गाने की ध्वनि उनके कानों में पड़ती रहती है तब तक मुँह बनाए आँखें बन्द किये पड़े रहते हैं,

जैसे ही यशोदा मौन हो जाती है, कृष्ण आँख खोलकर देखने लगते हैं। सूर ने कितना स्वाभाविक चित्रण किया है —

यशोदा हरि पालने झुलावै।
हलरावै दुलरावै, मल्हावै जोइ सोइ कछु गावै॥
मेरे लाल को आउ निंदरिया, काहे न आनि सुवावै।
कबहुं पलक हरि मूँद लेत हैं, कबहुं अधर फरकावै॥
सोवत जानि मौन है रहि, करि करि सैन बतावै॥

कृष्ण चलना सीख रहे हैं। देहरी लांघने का प्रयत्न कर रहे हैं, पर लांघ नहीं पाते, बार-बार गिर पड़ते हैं। यशोदा इस कार्य-कलाप को देखकर मन ही मन बड़ी प्रसन्न होती है। यशोदा श्रीकृष्ण को नितान्त असमर्थ पाकर उनका हाथ पकड़कर लांघना सिखाती हैं —

चलत देखि जसुमति सुख पावै।
ठुमिक-ठुमिक धरती पर रेंगत जननी देखि दिखावै।
देहरि लौं चलि जात बहुरि, फिरि फिरि इतही को आवै॥
गिरि गिरि परत बनत नहि लांघत, सुर मुनि सोच करावै।
तब जसुमति कर टेक स्याम को, क्रम-क्रम सो उतरावै॥

बालक की अबोधता और भोलापन सूर की दृष्टि से कभी नहीं बचा। अपने प्रतिबिम्ब को पकड़ने का कृष्ण का प्रयास कितना स्वाभाविक है —

Scanned with CamScanner

(1) रूप वर्णन

(2) चेष्टाओं का वर्णन

(3) क्रीड़ाओं का वर्णन

(4) अंतर्भावों का वर्णन

(5) संस्कारों, उत्सवों और समारोहों का वर्णन।

रूप-वर्णन में सूर ने कृष्ण के सौन्दर्य की अनेक उद्भावनायें की हैं। ब्रज-बालायें कृष्ण के बाल-सौन्दर्य पर तन-मन-धन सबकुछ न्योछावर करने को तैयार हैं, पर कृष्ण का सामीप्य छोड़ना उन्हें स्वीकार नहीं —

हौं बलि जाऊँ छबीले लाल की।
छिटक रही चहुँ दिसि जो लटुरियाँ, लटकन-लटकनि भाल की।
मोतिन सहित नासिका नथुनी, कंठ, कमल दल माल की।
सूरदास प्रभु प्रेम मगन भईं, ढिंग तजहिं ब्रजबाल की।

कृष्ण पालने में सोए हैं। यशोदा पालने को हिलाकर और लोरी गाकर कृष्ण को सुलाने का प्रयत्न कर रही हैं, परन्तु कृष्ण भी कम चालाक नहीं हैं, जब तक पालना हिलता रहता है और यशोदा के मधुर गाने की ध्वनि उनके कानों में पड़ती रहती है तब तक मुँह बनाए आँखें बन्द किये पड़े रहते हैं,

Scanned with CamScanner

जैसे ही यशोदा मौन हो जाती है, कृष्ण आँखे खोलकर देखने लगते हैं। सूर ने कितना स्वाभाविक चित्रण किया है —

यशोदा हरि पालनै झुलावै।
हलरावै दुलरावै, मल्हावै जोइ सोइ कुछ गावै॥
मेरे लाल को आउ निंदरिया, काहे न आनि सुआवै।
कबहुँ पलक हरि मूँद लेत हैं, कबहुँ अधर फरकावै॥
सोवत जानि मौन है रहि, करि करि सैन बतावै॥

कृष्ण चलना सीख रहे हैं। देहरी लाँघने का प्रयत्न कर रहे हैं, पर लाँघ नहीं पाते बार-बार गिर पड़ते हैं। यशोदा इस कार्य-कलाप को देखकर मन ही मन बड़ी प्रसन्न होती है। यशोदा श्रीकृष्ण को नितान्त असमर्थ पाकर उनका हाथ पकड़कर लाँघना सिखाती हैं —

चलत देखि जसुमति सुख पावै।
ठुमिक-ठुमिक पगों धर रेंगत ~~जननी~~ जननि देखि दिखावै।
देहरि लौं चलि जात बहुरि, फिरि फिरि इतही को आवै।
गिरि गिरि परत बनत नहि लाँघत, सुर मुनि सोच करावै।
तब जसुमति कर टेकि स्याम को, क्रम-क्रम सो उतरावै॥

बालक की अबोधता और भोलापन सूर की दृष्टि से कभी नहीं बचा। अपने प्रतिबिम्ब को पकड़ने का कृष्ण का प्रयास कितना स्वाभाविक है —

मनिमय कनक नंद के आँगन, बिम्ब पकरिबे धावत।
कबहुं निरखि हरि आपु छाँह को, कर सौं पकरन चाहत॥

अपने बच्चे का बाल विनोद देखकर माँ की प्रसन्नता की सीमा नहीं रहती, प्रेम के आवेग में कृष्ण का बाल्य-पन दिखाने के लिए वह दौड़ी हुई नन्द को बुलाने जाती है।

बाल दसा सुख निरखि जसोदा, पुनि-पुनि नन्द बुलावति।
अंचला तर लै ढाँकि सूर के प्रभु को दूध पिआवति॥

सूर के बाल वर्णन की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि इन्होंने कृष्ण के साथ-साथ मातृ हृदय के सुन्दर चित्र भी खींचे हैं —

सुत मुख देखि जसोदा फूली।
हर्षित देखि दूध की दँतियाँ प्रेम मगन तन की सुधि भूली।
बाहिर ते तब नंद बुलाए, देखो धौं सुन्दर सुखदाई॥

पुत्र वियोग से संतप्त यशोदा देवकी को संदेश देती है। मातृत्व की इस सुन्दर भावना को देखिए —

सन्देसो देवकी सों कहियो।
हौं तो धाय तिहारे सुत की कृपा करति ही रहियो।
जदपि टेव तुम जानत ही हो, तऊ, मोहि कहि आवै।
प्रात: होत मेरे लाल लड़ैते, माखन रोटी भावै।

सृष्टि के आरंभ से आज तक माताओं का

अपने बच्चों के विषय में प्रायः शिकायत करते सुने हैं कि "इसने तो मिट्टी बहुत खाता है।" सूर ने इस शिकायत से यशोदा को भी नहीं छोड़ा, परन्तु एक विशेषता के साथ, वह यह कि कृष्ण ने मुख में समस्त ब्रह्माण्ड के दर्शन करा दिए।

मोहन काहे न उगलो माटी।
बार-बार अनरुचि उपजावति, महरि हाथ लिए साँटी॥

माँ ने कुछ बहुतेरा कहने पर भी बालक नहीं मानता द
है, ऊपर से दाँत और भींच लेता है। अगर माँ जबर
दस्ती मुँह में उंगली डाल दे तो वह बिना काटे हुए बाहर नहीं निकलती। यशोदा ने भी धी, धी
थू, थू, बहुतेरा कहा पर कृष्ण ने एक न मानी –

महतारी को कह्यो न मानत, कपट चतुराई ठाटी।
बदन पसारि दिखाइ आपने, नाटक की परिपाटी॥

सूर-स्वभाव-चित्रण द्वारा रसोद्रेक में अद्वितीय हैं। उन्होंने अपने काव्य में पग-पग पर अन्तर्भाव का चित्रण किया है। बालक के हृदय में अपने साथियों को देखकर कभी-कभी स्पर्धा भी उत्पन्न हो जाती है। बलदाऊ की चोटी लम्बी है और मोटी भी, परन्तु कृष्ण की चोटी प्रयास करने पर भी छोटी है, उसका उन्हें दुःख है। वे एकदम माँ से शिकायत

Scanned with CamScanner

... बैठत हैं —

मैया कबहिं बढ़ैगी चोटी।
किती बार मोहि दूध पियत भई यह अजहुँ है छोटी।
तू तो कहति बल की बेनि ज्यों ह्वै है लांबी मोटी।

क्रीड़ा वर्णन में सूरदास माने सिद्धहस्त हैं। एक दिन साथियों में क्रोध बढ़ा क्योंकि कृष्ण ने दाव देने से मना कर दिया था, परन्तु बाल्यावस्था में साम्यवाद की प्रधानता रहती है। वहाँ न कोई बड़ा है और छोटा, न कोई धनी है और न मानी। सूर ने कितना स्वाभाविक-पूर्ण चित्रण किया है —

~~बात आज-की सी लगती है क्योंकि कृष्ण छोटे~~

खेलत में को काको गुसइयाँ।
हरि हारे, जीते श्रीदामा, बरबस को कत करत रिसैयाँ।
जाति पाँति हमते बड़ नाहिं, नाहिन बसत तुम्हारी छैयाँ।
अति अधिकार जनावत याते, अधिक तुम्हारे हैं कछु गैयाँ॥

बात आज-की सी लगती है क्योंकि छोटे बच्चे को चिढ़ाने के लिए खासकर लड़कियों को घर वाले कह देते हैं कि तुम्हें हमने कंजड़ियों से दो रोटी में खरीदा था। यही घटना कृष्ण के साथ भी सूरदास जी ने

घटवा दी। जब क्रोध की सीमा न रही, तो आपने खेलने जाना भी बन्द कर दिया। माँ का हृदय इस बात पर द्रवित हो गया, वह तो उसी, गोवर्धन शपथ खाई कि वास्तव में कृष्ण तू मेरा पुत्र है और मैं तेरी माँ हूँ।

एक उदाहरण दीजिए ——

मैया मोहि दाऊ बहुत खिजायौ।
मोसों कहत मोल कौ लीन्हौ, तै जसुमति कब जायो॥
कहा कहौं इहि रिस के मारे, खेलन हौं नही जात।
पुनि पुनि कहत कौन है माता, को है तुमरो तात।
सूर श्याम मोहि गोधन की सौं हौं माता तू पूत।

सूर के कृष्ण आयु से अवश्य छोटे हैं, परंतु तर्क और प्रत्युत्पन्न मतित्व में वे बहुत बड़े हैं। बड़ों-बड़ों को चकमा दे सकते हैं। यह स्वाभाविक चित्र सूर ने गोचारण और माखन चोरी प्रसंग में प्रस्तुत किए हैं ——

मैया मैं नहिं माखन खायो।

कृष्ण की उदण्डता जब गोपियों को ~~समझ~~ में असह्य होने लगी, तो कृष्ण को पकड़ कर यशोदा के पास ले गई और साफ - साफ

कह दिया —

जब हरि आवत आँगें, संकुचि तनक है जात।
कौन-कौन गुन कहुँ श्याम के नेकु न काहु डात॥

अवस्था के साथ-साथ हृदय के परिचय की भावना बढ़ी। अब तक ग्वालों तक ही सीमित था। एक दिन सहसा राधा को रास्ते में अकेली पाकर कृष्ण पूछ बैठे, "गोरी! तुम कौन हो? हमने तुम्हें कभी नहीं देखा।"

बूझत श्याम कौन तू गोरी।
कहाँ रहति, काकी हो बेटी, देखी नहीं कबहुँ ब्रज खोरी॥

इसके अतिरिक्त गोवर्धन लीला, कालिया दमन आदि प्रसंगों में भी सूर के बाल-वर्णन के दर्शन होते हैं। सूर का बाल वर्णन भक्ति और अध्यात्म का समन्वय है। अनेक अलौकिक कार्य करते हुए भी कृष्ण यशोदा के लिए साधारण बालक की भाँति ही बने रहते हैं, भगवान नहीं।

सूर की अन्तर्भेदिनी दृष्टि कृष्ण की बाल्यावस्था के एक-एक क्षण पर पड़ती है। बाल्य जीवन की कोई वृत्ति इस महाकवि की

Scanned with CamScanner

विराट प्रतिभा के स्पर्श से अछूती नहीं रही। वास्तव में सूर का बाल-वर्णन एक प्रकार से बाल मनोविज्ञान का सुन्दर अध्ययन है। सूर का वात्सल्य वर्णन पर डॉ० हजारी प्र० द्विवेदी ने लिखा है, "यशोदा के वात्सल्य में सब कुछ है, जो माता शब्द को इतना महिमामय बनाये हुये है। यशोदा के बहाने 'सूरदास' ने मातृ-हृदय का ऐसा स्वाभाविक, सरल और हृदयग्राही चित्र खींचा है कि आश्चर्य होता है। माता संसार का ऐसा पवित्र रहस्य है, जिसे कवि के अतिरिक्त और किसी को व्याख्या करने का अधिकार नहीं। सूरदास जहाँ पुत्रवती जननी के प्रेम-पोषक हृदय को छूने में समर्थ हुए हैं, वहाँ वियोगिनी माता के करुणाविगलित हृदय को छूने में भी समर्थ हुए हैं।"

—— x —— x ——

Scanned with CamScanner

हिन्दी (सामान्य) बी० ए०, पार्ट (२)

महादेवी वर्मा संक्षिप्त परिचय

आज के नारी उत्थान के युग में महादेवी जी ने न केवल साहित्य सृजन के माध्यम से अपितु नारी कल्याण संबंधी अनेक संस्थाओं को जन्म एवं प्रश्रय देकर इस दिशा में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। 'प्रयाग महिला विद्या-पीठ' इसका ज्वलन्त प्रमाण है। महादेवी जी, जहाँ एक श्रेष्ठ कवयित्री थीं, वहाँ मौलिक गद्यकार भी।

महादेवी जी का जन्म फर्रुखाबाद में सन् 1907 ई० में हुआ था। इनके पिता श्री गोविन्द प्रसाद वर्मा इन्दौर के 'डेली कॉलिज' में प्रोफेसर थे। महादेवी जी की प्रारंभिक शिक्षा यहीं से शुरू हुई। माता हेमरानी एक नम्र एवं विदुषी महिला थीं। उनकी भक्ति-भावना का प्रभाव महादेवी पर पड़ा। छठी कक्षा तक शिक्षा प्राप्त करने के पश्चात् नौ वर्ष की अल्पायु में ही इनका विवाह बरेली के डॉ० स्वरूप नारायण वर्मा से हो गया था। फलस्वरूप शिक्षा-क्रम बीच में ही टूट गया। चार पाँच वर्ष पश्चात् 1920 ई० में प्रयाग में मिडिल पास किया। इसके चार वर्ष बाद इन्होंने

हाई स्कूल की परीक्षा पास की। 1926 ई० में दर्शन विषय लेकर इन्होंने बी० ए० पास की। महादेवी जी मिडिल से लेकर एम० ए० तक सदैव प्रथम श्रेणी में ही पास होती रही। मिडिल और हाई स्कूल में तो उनका सर्वप्रथम स्थान रहा। एम० ए० करने के बाद 'प्रयाग महिला विद्यापीठ' में प्रधानाचार्य के पद पर नियुक्त हुई। कुछ दिनों तक हिन्दी की नारी पत्रिका 'चाँद' का भी आपने सम्पादन किया। अपनी साहित्यिक एवं सामाजिक सेवाओं के कारण ये उत्तर-प्रदेश विधान-परिषद की सदस्या भी मनोनीत हो गई थीं। सन् 1987 ई० में इनका स्वर्गवास हो गया।

काव्यकार के रूप में रचनाएँ —

भाव, भाषा और संगीत के संगम पर बैठकर महादेवी जी ने जिन काव्यों की रचना की वे हैं — नीहार, रश्मि, नीरजा, सान्ध्यगीत, दीपशिखा। 'यामा' इनकी नीहार, रश्मि तथा नीरजा कविताओं का सचित्र संग्रह है। महादेवी जी को हिन्दी साहित्य सम्मेलन प्रयाग ने 'नीहार' की रचना पर 500 रु० का

सेक्सरिया पुरस्कार तथा 'यामा' पर 1200 रु० का मंगला प्रसाद पारितोषिक प्रदान कर पुरस्कृत किया था। 11 सितम्बर 1987 को इनका शरीर पंचतत्व में विलीन हो गया।

काव्यगत विशेषताएँ —

अन्तर्मन की अनन्त वेदना तथा पीड़ा को लेकर महादेवी जी साहित्य के क्षेत्र में अवतीर्ण हुईं। प्रकृति का प्रत्येक कण इनकी विरह वेदना से तादात्म्य सम्बन्ध स्थापित किये हुए है। विरहजन्य अनुभवों एवं अनुभूतियों की मधुर अभिव्यक्ति इनके काव्य का श्रृंगार है। मीरा के काव्य में अपने 'प्रियतम', 'गिरधर', 'गिरधर गोपाल' के लिए जो वेदना, टीस, कसक, प्रतीक्षा, आतुरता एवं आत्म-निवेदन था, वही महादेवी के काव्य में भी काव्य में भी है — परन्तु महादेवी के प्रियतम अज्ञात हैं। मीरा का अलौकिक प्रेम था और महादेवी जी का लौकिक। महादेवी जी की रहस्य शैली उनकी वेदनापूर्ण अभिव्यक्तियों का सुंदर एवं मधुर आवरण है। कुछ उदाहरण —

प्रियतम के मिलन के लिए आतुर प्रार्थना का नारी-सुलभ चित्र देखिए —

"यदि तुम आ जाते एक बार
कितनी करुणा, कितने संदेश
पथ में बिछ जाते बन पराग।"
गाता प्राणों का तार-तार
अनुराग भरा उन्माद राग।
आँसू लेते वे पद पखार।"

प्रियतम के बिना रात में नींद कैसी। रात-भर की प्रतीक्षा देखिये —

पथ देख, बिता दी रैन, मैं प्रिय पहचानी नहीं।

महादेवी जी पीड़ा में सोते ही रहना चाहती हैं —

ठहरो, बेसुध पीड़ा को, मेरी न कहीं छू लेना।
जब तक वे आ न जगावें बस सोती रहने देना।।

कलापक्षीय विशेषताएँ — इनके काव्य की कलापक्षीय विशेषताएँ निम्नलिखित हैं —

(1) **भाषा** — महादेवी जी की प्रारंभिक रचनायें ब्रज में होती थीं, फिर उन्होंने खड़ी बोली में पदार्पण किया। इनकी खड़ी बोली शुद्ध परिष्कृत एवं परिमार्जित है। ओत-प्रोत है। भावों के अनुसार भाषा में भी प्रभावोत्पादकता है।

भाषा के विषय में आचार्य शुक्ल "गीत लिखने की शैली में जैसी सफलता महादेवी जी को हुई वैसी और किसी को नहीं। न तो भाषा का ऐसा स्निग्ध प्रवाह और कहीं मिलता है और न हृदय की भाव-भंगिमा। जगह-जगह ऐसी ढली हुई और अनूठी व्यंजना से भरी हुई पदावली मिलती है कि हृदय खिल उठता है।"

(2) शैली – महादेवी जी की शैली 'गीत शैली' है। इनकी शैली धीरे-धीरे विकसित शैली का परिष्कृत रूप है। इनकी शैली को "भावात्मक गीत शैली" कहा जा सकता है। इस शैली में अस्पष्टता उत्पन्न कर दी है।

(3) रस, छन्द, अलंकार – महादेवी जी का काव्य वियोग श्रृंगार का काव्य है, करुण रस भी कहीं-कहीं मिल ~~सकता~~ हो जाता है।

(4) छंद योजना में महादेवी जी ने केवल 'आधुनिक पद' को ही अपनाया है, जिसे गीत कहते हैं।

अलंकारों की दृष्टि से रूपक तथा प्रस्तुत से अप्रस्तुत का बोध कराने वाले समासोक्ति आदि अलंकारों की प्रधानता है, जैसी रहस्यवादी कवियों में होती है।

—x—x—